


---

Shri Shiva Ashtakam by Markandeya

——  
श्रीमार्कण्डेयकृतं शिवाष्टकम्

——  
Document Information



---

Text title : Shri Markandeya Shiva Ashtakam

File name : mArkaNDeyashivAShTakam.itx

Category : shiva, aShTaka

Location : doc\_shiva

Proofread by : Vani V., Ruma Dewan

Latest update : July 31, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 31, 2023

*sanskritdocuments.org*



श्रीमार्कण्डेयकृतं शिवाष्टकम्



सदा गोदावर्यास्तटनिकटवासं पशुपतिं  
वदान्यं सर्वेशं वरदमखिलार्थैकं घटनम् ।  
शिवं गौरीनाथं शशिधरमनन्तार्चितपदं  
भजे मार्कण्डेयं भसितनिटलं भव्यनटनम् ॥ १ ॥

सदा कैलासाद्रि स्वपदमनघं सर्वजगतां  
प्रभुं श्रीविश्वेशं प्रकटित परन्धामसरथम् ।  
नटेशं गौरीशं ललितरविचन्द्रानलसदृशं  
भजे मार्कण्डेयं भसितनिटलं भव्यनटनम् ॥ २ ॥

महादेवं सर्वं मधुरिपुसखं मङ्गलकरं  
परं शम्भुं साम्बं पुरमथनमीशं भवहरम् ।  
स्मरारिं सर्वज्ञं स्मरहरमनादिं मृगधरं  
भजे मार्कण्डेयं भसितनिटलं भव्यनटनम् ॥ ३ ॥

प्रदोषेषु स्वान्तं प्रबलतरतौर्यत्रिककृतं  
त्रयत्रिंशत्कोटि त्रिशदप्रवरैः सं परिवृतम् ।  
रमावाणीन्द्र श्रीपति विधिकृतोल्लास्यकरणं  
भजे मार्कण्डेयं भसितनिटलं भव्यनटनम् ॥ ४ ॥

भवानीहृत्पद्मारुणमहिनि नीलोत्पलगलं  
सहस्रारे पद्मानिशमविवसन्तं सुरगुरुम् ।  
स्तुतिभ्यो भक्तानां निखिलसुखदं सुस्थिरपदं  
भजे मार्कण्डेयं भसितनिटलं भव्यनटनम् ॥ ५ ॥

शिवस्त्वं विष्णुत्वं सकलभुवनस्त्वं रविशशि-  
नभस्त्वं कायस्त्वं सकलजगात्मा त्वमसि भो ।  
यतिर्देयं सान्ते सुखतमखिलं जैमिनिवरेः  
भजे मार्कण्डेयं भसितनिटलं भव्यनटनम् ॥ ६ ॥


सदोच्चैराह्वानं हरहरहरेति प्रवचसा  
सदा भक्त्यानन्दो शिवशिवशिवेति स्वमनसा ।  
स्तुतिं वारं वारम्भवभवभवेति प्रतिभया ।  
भजे मार्कण्डेयं भसितनितलं भव्यनटनम् ॥ ७ ॥


यमाहूतं भीतं मुनिवरनुतं पाशनिहतिं  
भवन्तं सद्भक्त्या हृदिशिशुमवन्तं करुणया ।  
शरण्यं भक्तानां परमगतिमीशं परशिवं  
भजे मार्कण्डेयं भसितनितलं भव्यनटनम् ॥ ८ ॥

श्रीकोलाचलसद्वंशवारिदेस्तु सुधाकरः ।  
यज्ञेशो भूसुरश्चक्रे मार्कण्डेयशिवाष्टकम् ॥ ९ ॥  
इति श्रीमार्कण्डेयकृतं शिवाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Vani V.

---

——  
*Shri Shiva Ashtakam by Markandeya*  
pdf was typeset on July 31, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

